

तुकों की
शक्ति, भारत की
नई राजनीतिक
व्यवस्था !

दिल्ली सल्तनत

(1206 ई. - 1526 ई.)



1. सल्तनत काल के पाँच राजवंश एवं कालक्रम

राजवंश	शासन काल	संस्थापक	महत्वपूर्ण शासक	अंतिम शासक
गुलाम (मामलक) वंश	1206 - 1290 ई.	कुतुबुद्दीन ऐबक	इल्तुतमिश, बलबन, रजिया	शमसुद्दीन क्यूमर्स
खिलजी वंश	1290 - 1320 ई.	जलालुद्दीन फिरोज खिलजी	अलाउद्दीन खिलजी	खुसरो खान
तुगलक वंश	1320 - 1414 ई.	गयासुद्दीन तुगलक	मुहम्मद बिन तुगलक, फिरोज शाह तुगलक	नसीरुद्दीन महमूद
सैयद वंश	1414 - 1451 ई.	खिज़्र खान	मुबारक शाह, मुहम्मद शाह	अलाउद्दीन आलम शाह
लोदी वंश	1451 - 1526 ई.	बहलोल लोदी	सिकंदर लोदी	इब्राहिम लोदी

2. राजवंशों का विस्तृत विश्लेषण एवं महत्वपूर्ण शासक

गुलाम (मामलक / इल्बारी) वंश (1206 - 1290 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 - 1210 ई.)



कुतुबुद्दीन ऐबक

- उपाधियों एवं पहचान:
'लाखबख्श' (लाखों का दान देने वाला)
तथा 'कुरानख्वान'
(सुरीली आवाज में कुरान पढ़ने वाला)
- इसने कभी 'सुल्तान' की उपाधि नहीं धारण की; केवल 'मलिक' और 'सिपहसालार' के पदों से संतुष्ट रहा।

→ राजधानी: लाहौर

स्थापत्य कला



कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद
(भारत की प्रथम तुर्क मस्जिद)



अद्वैत दिन का झोपड़ा
(अजमेर में, विगहराज चतुर्थ द्वारा निर्मित संस्कृत विद्यालय के स्थान पर)

कुतुबमीनार

सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में निर्माण कार्य प्रारंभ करवाया।

मृत्यु:

1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर।

शमसुद्दीन इल्तुतमिश (1210 - 1236 ई.)



शमसुद्दीन इल्तुतमिश

- दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक: 1229 ई. में बगदाद के अब्बासी खलीफा (अल-मुस्तंसिर बिल्लाह) से 'मंशूर' (स्वीकृति पत्र) और 'खिल्लत' (सम्मान सूचक वस्त्र) प्राप्त कर वैधानिक सुल्तान बना।
- राजधानी परिवर्तन: लाहौर से दिल्ली राजधानी स्थानांतरित की।

मुद्रा प्रणाली का जनक



टका

शुद्ध अरबी शैली का चांदी का सिक्का (175 ग्रैन)



जीतल

तांबे का सिक्का

सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाने की परंपरा शुरू की।

प्रशासनिक संगठन

- ▶ तुर्कान-ए-चिहालगानी (चालीसा दल): 40 वफादार तुर्क दासों का एक शक्तिशाली प्रशासनिक व सैन्य गुट तैयार किया।
- ▶ इक्ता प्रणाली: अधिकारियों और सैनिकों को वेतन के बदले भूमि क्षेत्र (इक्ता) आवंटित करने की परंपरा शुरू की।

चंगेज खान का खतरा (1221 ई.)

- ख्वारिज़्म के शाह के पुत्र जलालुद्दीन मांगबर्नी को शरण देने से इनकार कर दिल्ली सल्तनत को मंगोल आक्रमण से सुरक्षित बचाया।



"राजनीति, प्रशासन और संस्कृति का नया अध्याय - दिल्ली सल्तनत"

रजिया सुल्तान (1236 - 1240 ई.)



रजिया सुल्तान

मध्यकालीन भारत की प्रथम महिला मुस्लिम शासक

- जनता के प्रत्यक्ष सहयोग से गद्दी पर बैठी (लाल वस्त्र पहनकर न्याय मांगना)।
- पर्दा प्रथा छोड़कर 'कुबा' (कोट) और 'कुलाह' (टोपी) पहनकर दरबार तथा युद्ध क्षेत्र में संचालन किया।
- जमालुद्दीन याकूत (अबीसीनियाई/हब्शी दास) को 'अमीर-ए-आखूर' (अश्वशाला का प्रधान) नियुक्त करने पर तुर्क अमीर असंतुष्ट हुए।
- भटिंडा के सूबेदार अलतूनिया से विवाह किया।
- 1240 ई. में कैथल (हरियाणा) के निकट डाकुओं द्वारा हत्या कर दी गई।

गयासुद्दीन बलबन (1266 - 1287 ई.)



गयासुद्दीन बलबन

- **राजत्व सिद्धांत :**
राजत्व को दैवीय अधिकार माना। स्वयं को 'नियाबत-ए-खुदाई' (ईश्वर का प्रतिनिधि) और 'जिल्ले-इलाही' (ईश्वर की छाया) घोषित किया तथा पौराणिक ईरानी योद्धा 'अफ्रसियाब' का वंशज बताया।
- **रक्त एवं लौह की नीति :**
मेवातियों, दोआब के राजपूतों और बाहरी मंगोलों के दमन हेतु कठोर नीति अपनाई।
- **चालीसा दल का दमन :**
इल्तुतमिश द्वारा स्थापित तुकान-ए-चिहालगानी को पूरी तरह समाप्त किया।
- **ईरानी दरबारी परंपराएं :**
दरबार में 'सिजदा' (धुटनों के बल बैठकर सिर झुकाना) और 'पाबोस' (सुल्तान के पैर चूमना) की प्रथा प्रारंभ की तथा 'नौरोज' (पारसी नववर्ष) उत्सव की शुरुआत की।
- **सैन्य सुधार :** दीवान-ए-अर्ज की स्थापना (प्रधान: आरीज-ए-मुमालिक)।
- **गुप्तचर व्यवस्था :** बरीद-ए-मुमालिक का गठन किया।

रक्त एवं लौह की नीति

सिजदा और पाबोस

खिलजी वंश (1290 - 1320 ई.)

खिलजी क्रांति :

खिलजी वंश की स्थापना ने सत्ता पर तुर्क अभिजात वर्ग के एकाधिकार को समाप्त किया और प्रतिभा के आधार पर पदों का वितरण शुरू हुआ।



अलाउद्दीन खिलजी (1296 - 1316 ई.)



अलाउद्दीन खिलजी

साम्राज्य विस्तार एवं अभियान :

उत्तर भारत

- ▶ गुजरात विजय (1299 ई.)
- यहीं से 'मलिक काफूर' को खरीदा गया।
- ▶ रणथंभौर (1301 ई.)
- हममीर देव चौहान
- ▶ चित्तौड़ (1303 ई.)
- राणा रतन सिंह
- ▶ मालवा (1305 ई.)

दक्षिण भारत अभियान

- (मलिक काफूर 'हजार दीनारी' के नेतृत्व में)
- ▶ देवगिरि (रामचंद्र देव)
 - ▶ वारंगल (प्रतापरुद्र देव)
- यहीं से कोहिनूर हीरा प्राप्त हुआ।
 - ▶ द्वारसमुद्र (वीर बल्लाल तृतीय)
 - ▶ मदुरै (पांड्य राज्य)

उद्देश्य : राज्यों को प्रत्यक्ष नियंत्रण केंद्र नहीं, बल्कि उनसे कर वसूलना और अपनी अधीनता स्वीकार करवाना।



उपाधि :

'सिकंदर-ए-सानी' (द्वितीय सिकंदर)
- सिक्कों पर अंकित करवाई।



सिकंदर-ए-सानी

सैन्य सुधार :



दाग और हुलिया प्रथा

- सल्तनत में प्रथम बार विशाल 'स्थायी सेना' का गठन और सैनिकों को 'नकद वेतन' देने की व्यवस्था।
- **दाग और हुलिया प्रथा :**
घोड़ों को दागने और सैनिकों का हुलिया (शारीरिक विवरण) दर्ज करने की पद्धति शुरू की।

भू-राजस्व सुधार :

- ▶ **मसाहत प्रणाली :** भूमि की पैमाइश (नाप-जोख) कराकर विश्वास को आधार मानकर उपज का 50% (1/2 भाग) कर निर्धारित किया।
- ▶ **नवीन कर :** 'चरी' (दुधारू पशुओं पर चारागाह कर) और 'घरी' (मकान कर)
- ▶ **दीवान-ए-मुस्तखराज :** बकाया लगान की वसूली के लिए नया विभाग।

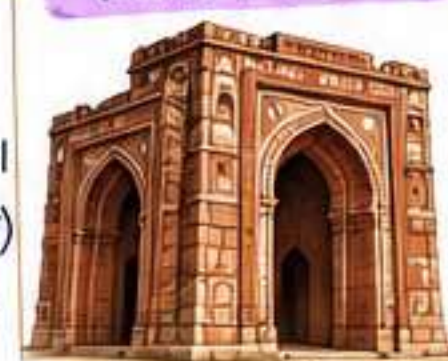
बाजार नियंत्रण नीति (मूल्य नियंत्रण) :

- ▶ दैनिक उपभोग, अनाज, कपड़े, पशु और दासों के मूल्यों को राज्य द्वारा निश्चित किया गया।
- ▶ **दीवान-ए-रियासत :** बाजार व्यवस्था का सर्वोच्च नियामक विभाग (मलिक याकुब प्रमुख)।
- ▶ **शहना-ए-मंडी :** प्रत्येक बाजार का अधीक्षक/दरोगा।
- ▶ **बरीद और मुनहियान :** मूल्य और तौल की निगरानी करने वाले गुप्तचर।

नियंत्रित मूल्य = स्थिर समाज



स्थापत्य कला :



- ▶ **अलाई दरवाजा** (घोड़े की नाल के आकार के मेहराब का प्रथम वास्तविक प्रयोग)
- ▶ **सीरी का किला**
- ▶ **हजार सितून महल (दिल्ली)**